[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 8087 **GC** **Your Roll No...............**
प्रश्न पत्र का क्रमांक **आपका अनुक्रमांक...........**

Unique Paper Code : 62054306
यूनिक पेपर कोड

Name of the Paper : Hindi Katha Sahitya

Name of the Course : **B.A. (Prog) Hindi Discipline**
पाठ्यक्रम का नाम : **बी. ए. (प्रोग्राम) हिन्दी डिसप्लिन**

Semester / Annual : III
सेमेस्टर / वार्षिक : तीन

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75
समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.
2. All question are Compulsory.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रंग व्याख्या कीजिए:- (10+10=20)

(क) मैं उन बहू-बेटियों में नहीं हूँ। मेरा जिस वक्त जी चाहेगा, जाऊँगी, जिस वक्त जी चाहेगा, आऊँगी। मुझे किसी का डर नही। जब यहाँ कोई मेरी बात नहीं पूछता, तो मैं भी किसी को अपना नहीं समझती। सारे दिन अनाथों की तरह पड़ी रहती हूँ। कोई झाँकता तक नहीं। मैं चिड़िया नहीं हूँ, जिसका पिंजड़ा दाना-पानी रखकर बन्द कर दिया जाए। मैं भी आदमी हूँ। अब इस घर में मैं क्षण-भर न रूकूँगी।

अथवा

मगर बाल-बच्चों के आदमी क्या करें। तीस रुपयों में गुज़र नहीं हो सकती। मैं अकेला आदमी हूँ। मेरे लिए डेढ़ सौ काफी है। कुछ बचा भी लेता हूँ; लेकिन जिस घर में बहुत से आदमी हों, लड़कों की पढ़ाई हो, लड़कियों की शादियाँ हों, वह आदमी क्या कर सकता है। जब तक छोटे-छोटे आदमियों का वेतन इतना न हो जायेगा कि वह भलमनसी के साथ निर्वाह कर सकें, तब तक रिश्वत बन्द न होगी।

P.T.O.

(ख) मुझे धक्का-सा लगता है और मैं ओवरकोट पहनकर, चप्पलें डालकर नीचे उतर आता हूँ। मुझे मेरे कदम अपने-आप अरथी के पास पहुँचा देते हैं और मैं चुपचाप उसके पीछे-पीछे चलने लगता हूँ। चार आदमी कंधा दिए हुए हैं और सात आदमी साथ चल रहे हैं-सातवाँ मैं ही हूँ। और मैं सोच रहा हूँ। चार आदमी कंधा दिए हैं और सात आदमी साथ चल रहे हैं-सातवाँ मैं ही हूँ। और मैं सोच रहा हूँ कि आदमी के मरते ही कितना फर्क पड़ जाता है। पिछले साल ही दीवानचंद ने अपनी लड़की की शादी की थी तो हजारों की भीड़ थी। कोठी के बाहर कारों की लाइन लगी हुई थी....।

अथवा

जगदीश बाबू का मुँह क्रोध के कारण तमतमा गया, शब्दों पर अधिकार नहीं रह सका। मदन 'प्रैस्टिज' का अर्थ समझ सकेगा या नहीं यह भी उन्हें ध्यान नहीं रहा, पर मदन बिना समझाए ही सब कुछ समझ गया था। जिसने इस कच्ची उम्र में ही दुनिया को समझने की हिम्मत कर ली हो, वह क्या एक शुद्र शब्द का अर्थ भी नही समझ सकेगा?

2. उपन्यास के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

उपन्यास में समाज का ही रूप प्रतिबिंबित होता है। समीक्षा कीजिए।

3. गबन के आधार पर देवीदीन का चरित्र-चित्रण कीजिए। (12)

अथवा

'रमानाथ' के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।

4. 'दिल्ली में एक मौत' कहानी वर्तमान समय में प्रासंगिक है। समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

कहानी के तत्वों के आधार पर 'हरी बिन्दी' की समीक्षा कीजिए।

5. कहानी के स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

कहानी की संरचना की विश्लेषण कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए। (7)

1. 'दाज्यू' कहानी के पात्र योजना
2. अज्ञेय की कहानी 'रोज' का शिल्प निरुपण।
3. 'हरी बिन्दी' कहानी की मूल समस्या